आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 28 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज सीजन का अंतिम प्रभु मिलन पर आईये कुछ ऐसा पुरुषार्थ करे कि वह यादगार बन जाये "*

इस सीजन का प्रभु मिलन का अंतिम दिन अट्ठाइस मार्च। और पुनः सर्वशक्तिमान प्यार के सागर के **श्रेष्ठ वायब्रेशन्स को सारा दिन अनुभव** करने का समय है।

यह दिन हम सभी के लिए **वरदानी दिन** होता है। सभी ब्राह्मण कुलभूषण याद करे, कितने भाग्यवान है हम जो अपने **परमपिता**, **परम शिक्षक और परम सदगुरू** से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लोग जिसे ढूंढते है, जिसके क्षणिक दर्शनों के लिए न जाने क्या क्या करते है। अनेक तपस्वी आज भी हिमालय के गुफ़ा में उनके दर्शनों के अभिलाषी है। कोई कोई शुद्ध आश्रम में तपस्या कर रहे है। **कैलाश** के आस-पास।

कोई कहते है **काशी** के नीचे भी एक काशी है, सूक्ष्म काशी। जिसमें अनेक तपस्वी तपस्या कर रहे है। लेकिन हम सभी को **गहन तपस्या** सिखाई स्वयं ज्ञानेश्वर योगेश्वर परमपिता ने।

जो परम शिक्षक है वो सहज **राजयोग** सिखाते है। सहज ज्ञान दे रहे है। हम सभी उनकी पालना ली। तो सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को देखकर मन ही मन मुस्कुराये।

ऐसा भाग्यवान, ऐसा **पुण्य आत्मायें** है हम जिनसे प्रभू मिलन होता है। जिन पर भगवान की रोज़ नज़र पड़ती है। लेकिन हम अगर उनपर नजर रखेंगे, तो उनकी नजर हमें निहाल करने वाली होंगी।

हमें देखना है, हमारी नज़र इधर-उधर तो नहीं भटकती? देहधारियों के पीछे तो नहीं दौड़ती? हमें चारों ओर से नज़र को हटाकर **एक के स्वरुप में उसे स्थिर करना है।**

तो आज इसका हम बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे। चारों ओर से बुद्धि हटाकर **ज्ञानसूर्य** पर स्थिर। उससे निरंतर किरणें लेते रहना आज का दिन विशेष

उनकी मदद से हम सहज योग का अनुभव करेंगे। **शक्तियाँ मिल रही है।** मन आनन्द बिभोर हो रहा है। इसकी श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे।

तो आज का दिन बार-बार याद करना ...

" मेरे जैसा भाग्यवान इस संसार में कोई नहीं .. भगवान से मिलन हो रहा है "

कभी उनके पास जाना। दोनों ही स्थान है उनके। कभी परमधाम में निराकारी स्वरुप में और कभी सूक्ष्म लोक में, अव्यक्त दिव्य फरिश्ते सम्मुख उनसे दृष्टि लेना। और कभी उन दोनों को नीचे बुला लेना।

एकबार ..

" निराकार ज्ञानसूर्य .. सर्वशक्तिमान .. नीचे आ गये .. मेरे आखों के सामने .. उनके वायब्रेशन्स मुझे मिल रहे है "

दुसरी बार ..

" बापदादा .. दोनों ही मेरे सम्मुख है .. अर्थात शिवबाबा ब्रह्मा तन में आकर मुझे दृष्टि दे रहे है .. सिर पर अपना वरदानी हाथ रख दिये है "

बस कुछ देर बाद, निश्चित रुप से यह अनुभव परम आनन्द देने वाला है के

" परम सदगुरू के हाथ मेरे सिर पर "

सभी अनुभव करे ..

" उन हाथों से बहुत सुखद फीलिंग .. सुखद वायब्रेशन्स मुझमें समा रहे है "

यह दोनों अनुभव आज विशेष रूप से करेंगे। और आज का यह दिन वरदानी दिन भी है। परम सदगुरू से जो वरदान चाहे प्राप्त कर ले। वो अपना सबकुछ देने के लिए तैयार रहते है।

भण्डार खोलकर रखे है ..

" जो चाहे ले लो .. अधिकार से मांग लो .. मुझे यह चाहिए .. आपको देना है "

आज बाबा अपने उन बच्चों को बहुत कुछ देंगे ...

" जो उसके वफ़ादार है .. आज्ञाकारी है .. उसके प्रेम में मग्न रहता है .. उसके लिए अपना सर्वस्व कुर्बान करते है .. उसकी आज्ञाओं को शिरोधार्य करते है .. जिनका झुकाव अब संसार की ओर नहीं है .. जो केवल एक ही मार्ग के अनुगामी है "

तो ऐसी दिन पर सभी बहुत अधिक अच्छे **अनुभव करे।** जो कर सकते है वो **अन्तर्मुखी रहे।** और सारा दिन इस तरह का चिन्तन और अभ्यास करे।

तो आज का प्रभु मिलन सदा के लिए यादगार बन जायेगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org